इस्लाम के बारे में सात सामान्य प्रश्न (2 का भाग 1)

रेटिंग:

विवरण: [illegible]

श्रेणी: लेख इस्लाम की मान्यताएं इस्लाम क्या है

द्वारा: Daniel Masters, Isma'il Kaka and Robert Squires

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 09 Nov 2021

1. इस्लाम क्या है?

इस्लाम एक धर्म का नाम है, या अधिक उचित रूप से 'जीवन जीने का तरीका' है, जिसे ईश्वर (अल्लाह) ने प्रकट किया है और जिसका पालन ईश्वर के सभी पैगंबरो और दूतों ने किया, जिन्हें ईश्वर ने मानवजाति के लिए भेजा था। यहां तक कि यह नाम अन्य धर्मों के बीच अद्वितीय है क्योंकि इसका अर्थ होने की स्थिति है; यह किसी विशेष व्यक्ति का उल्लेख नहीं करता है, जैसे कि ईसाई धर्म, बौद्ध धर्म या पारसी धर्म; या किसी विशेष राष्ट्र का उल्लेख नहीं करता है, जैसे यहूदी जनजाति या हिंदू धर्म। जिस अरबी शब्द से इस्लाम की उत्पत्ति हुई है, उसका अर्थ है शांति, सुरक्षा, सलाम, निर्दोषता, स्वस्थता, अधीनता, स्वीकृति, समर्पण और मोक्ष। इस्लाम विशेष रूप से ईश्वर के अधीन होने की स्थिति है, सिर्फ उसकी पूजा करना, और श्रद्धापूर्वक उसके कानून को स्वीकार करना और उसका पालन करना। इस समर्पण से, इसके शाब्दिक अर्थ में निहित शांति, सुरक्षा और स्वस्थ कल्याण प्राप्त होता है। इसलिए, एक मुस्लिम एक मनुष्य (पुरुष या महिला) है जो उस स्थिति में है। एक व्यक्ति का इस्लाम पापों, अज्ञानता और गलत कामों से कमजोर हो जाता है, और ईश्वर के साथ साझीदारों को जोड़ने या उस पर अविश्वास करने से समग्र रूप से शून्य हो जाता है।

2. मुस्लिम क्या हैं?

अरबी शब्द "मुस्लिम" का शाब्दिक अर्थ है "कोई व्यक्ति जो इस्लाम की स्थिति में है (ईश्वर की इच्छा और कानून के अधीन)।" इस्लाम का संदेश पूरी दुनिया के लिए है और जो कोई भी इस संदेश को स्वीकार करता है वह मुसलमान हो जाता है। कुछ लोग गलत सोचते हैं कि इस्लाम सिर्फ अरब के लोगों का धर्म है, लेकिन यह सच नही है। वास्तव में, दुनिया के 80% से अधिक मुसलमान अरब के नहीं हैं! भले ही अरब के अधिकांश लोग मुसलमान हैं, फिर भी अरब मे ऐसे लोग भी हैं जो ईसाई, यहूदी और नास्तिक हैं। अगर कोई मुस्लिम दुनिया में रहने वाले विभिन्न लोगों पर एक नज़र डालें - नाइजीरिया से बोस्निया और मोरक्को से इंडोनेशिया तक - यह समझना काफी आसान हो जायेगा कि मुसलमान सभी विभिन्न जातियों, जातीय समूहों, संस्कृतियों और राष्ट्रीयताओं मे हैं। इस्लाम हमेशा से सभी लोगों के लिए एक सार्वभौमिक संदेश रहा है। यह इस तथ्य में देखा जा सकता है कि पैगंबर मुहम्मद के कुछ शुरुआती साथी न केवल अरब के थे, बल्कि फारसी, अफ्रीकी और बाइज़ेंटाइन रोमन भी थे। एक मुसलमान होने के नाते ईश्वर की प्रकट शिक्षाओं और कानूनों के प्रति पूर्ण स्वीकृति और सक्रिय आज्ञाकारिता की आवश्यकता होती है। एक मुसलमान वह व्यक्ति है जो सर्वशक्तिमान ईश्वर की इच्छा पर अपने विश्वासों, मूल्यों और विश्वास के आधार पर स्वतंत्र रूप से स्वीकार करता है। हालांकि आप इसे आज उतना नहीं देखते हैं, लेकिन अतीत मे "मुसलमान" शब्द का इस्तेमाल अक्सर मुसलमानों के लिए एक लेबल के रूप में किया जाता था। यह लेबल एक गलत नाम है, और यह या तो जानबूझकर की गई विकृति या सरासर अज्ञानता का परिणाम है। इस भ्रांति का एक कारण यह भी है कि यूरोपीय लोगों को सदियों से सिखाया जाता रहा है कि मुसलमान पैगंबर मुहम्मद की उसी तरह पूजा करते हैं जैसे ईसाई यीशु की पूजा करते हैं। यह बिल्कुल सच नहीं है, क्योंकि किसी को मुसलमान नहीं माना जाता है, अगर वह ईश्वर के सिवा किसी अन्य की पूजा करता है।

3. अल्लाह कौन है?

अक्सर इस्लाम के बारे में चर्चा में अरबी शब्द "अल्लाह" का इस्तेमाल किया जाता है। "अल्लाह" शब्द केवल सर्वशक्तिमान ईश्वर के लिए अरबी शब्द है, और अरबी भाषी ईसाइयों और यहूदियों द्वारा उपयोग किया जाने वाला एक ही शब्द है। वास्तव में, ईश्वर शब्द के अस्तित्व में आने से बहुत पहले अल्लाह शब्द का प्रयोग किया जाता था, क्योंकि अंग्रेजी एक अपेक्षाकृत नई भाषा है। यदि कोई बाइबिल का अरबी अनुवाद देखे, तो वह "अल्लाह" शब्द का उपयोग देखेगा जहाँ अंग्रेजी में "ईश्वर" शब्द का उपयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, अरबी भाषी ईसाई अपने सिद्धांत और विश्वास के अनुसार कहते हैं कि यीशु अल्लाह के पुत्र हैं। इसके अलावा, सर्वशक्तिमान ईश्वर के लिए अरबी शब्द, "अल्लाह", अन्य सेमेटिक भाषाओं में ईश्वर के लिए शब्द के समान है। उदाहरण के लिए, ईश्वर के लिए इब्रानी शब्द "एला" है। विभिन्न कारणों से, कुछ गैर-मुस्लिम गलत सोचते हैं कि मुसलमान मूसा और इब्राहीम और यीशु के ईश्वर की तुलना में एक अलग ईश्वर की पूजा करते हैं।

निश्चित रूप से ऐसा नहीं है, क्योंकि इस्लाम का शुद्ध एकेश्वरवाद सभी लोगों को नूह, इब्राहीम, मूसा, यीशु और अन्य सभी पैगंबरो (इन सभी पर ईश्वर की कृपा हो) के ईश्वर की पूजा करने के लिए कहता है।

4. मुहम्मद कौन है?

अंतिम और आखरी पैगंबर जिसे ईश्वर ने मानवता के लिए भेजा, वह पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की दया और कृपा उन पर बनी रहे) थे। चालीस वर्ष की आयु में, उन्होंने ईश्वर से रहस्योद्घाटन प्राप्त किया। फिर उन्होंने अपने जीवन के शेष हिस्से को इस्लाम की शिक्षाओं को समझाने और जीने में बिताया, जो धर्म ईश्वर ने उन्हें बताया था। पैगंबर मुहम्मद कई कारणों से सभी पैगंबरों में सबसे महान हैं, लेकिन मुख्य रूप से इसलिए कि उन्हें ईश्वर द्वारा अंतिम पैगंबर के रूप में चुना गया था - जिसका मानवता का मार्गदर्शन करने का लक्ष्य आखरी दिन तक जारी रहेगा क्योंकि उन्हें सभी पर दया के रूप में भेजा गया है। उनके मिशन के परिणाम ने किसी भी अन्य पैगंबर की तुलना में अधिक लोगों को एक ईश्वर में शुद्ध विश्वास में लाया है। समय की शुरुआत के बाद से, ईश्वर ने पृथ्वी पर पैगंबरो को भेजा, प्रत्येक को विशिष्ट राष्ट्र में भेजा। हालाँकि, पैगंबर मुहम्मद को पूरी मानवता के लिए अंतिम दूत के रूप में भेजा गया था।

भले ही अन्य धार्मिक समुदायों ने एक ईश्वर में विश्वास करने का दावा किया है, लेकिन समय के साथ कुछ भ्रष्ट विचार उनके विश्वासों और प्रथाओं में प्रवेश कर गए, जो उन्हें पैगंबरों के शुद्ध ईमानदार एकेश्वरवाद से दूर ले गए। कुछ ने अपने पैगंबरों और संतों को सर्वशक्तिमान ईश्वर के मध्यस्थ के रूप में देखा। कुछ लोगों का तो यह भी मानना था कि उनके पैगंबर ही ईश्वर, या "देहधारी ईश्वर" या "ईश्वर के पुत्र" की अभिव्यक्ति थे। इन सभी भ्रांतियों के कारण सृष्टिकर्ता के बजाय सृजित प्राणियों की पूजा की जाती है, और इस विश्वास ने मूर्तिपूजा प्रथा में योगदान दिया कि सर्वशक्तिमान ईश्वर से बिचौलियों के माध्यम से संपर्क किया जा सकता है। इन झूठ से बचने के लिए, पैगंबर मुहम्मद ने हमेशा इस बात पर जोर दिया कि वह केवल एक इंसान थे, जो ईश्वर के संदेश का प्रचार और पालन करने के लक्ष्य के साथ आये थे। उन्होंने मुसलमानों को उन्हें "ईश्वर के दूत और उनके दास" के रूप में संदर्भित करना सिखाया। ईश्वर ने मुहम्मद को उनके जीवन और शिक्षाओं के माध्यम से सभी लोगों के लिए आदर्श उदाहरण बनाया - वह अनुकरणीय पैगंबर, राजनेता, सैन्य नेता, शासक, शिक्षक, पड़ोसी, पति, पिता और मित्र थे। अन्य पैगंबरो और दूतों के विपरीत, पैगंबर मुहम्मद इतिहास के पूर्ण प्रकाश में थे, और उनकी सभी बातों और कार्यों को सावधानीपूर्वक दर्ज और एकत्र किया जाता था। मुसलमानों को केवल 'विश्वास' रखने की आवश्यकता नहीं है कि वह अस्तित्व में है, या कि उनकी शिक्षाओं को संरक्षित किया गया है - वे जानते हैं कि यह एक तथ्य है। मुहम्मद को बताए गए संदेश को विकृत होने या भूल जाने या खो जाने से बचाने के लिए ईश्वर ने इसकी जिम्मेदारी ली। यह आवश्यक

था क्योंकि ईश्वर ने वादा किया था कि मुहम्मद मानवजाति के लिए अंतिम दूत होंगे। ईश्वर के सभी दूतों ने इस्लाम के संदेश का प्रचार किया - अर्थात ईश्वर के कानून और सिर्फ एक ईश्वर की पूजा - लेकिन मुहम्मद इस्लाम के अंतिम पैगंबर हैं वो अंतिम और पूर्ण संदेश लाये जिसे अंतिम दिन तक कभी नहीं बदला जा सकता है।

इस लेख का वेब पता:

https://www.islamreligion.com/hi/articles/1562

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।